उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: 326/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 20.06.2024

दिनांक	:	20 जून, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की सातवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की सातवीं बैठक श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 20 जून, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक व उद्यान विभाग; गन्ना विभाग; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; रेशम विभाग; मत्स्य विभाग के प्रतिनिधि तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा, कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के कीट वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन वैज्ञानिक; आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के राईस ब्रीडर द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

मानसून 2024 की प्रगति

- दक्षिण पश्चिम मानसून की उत्तरी सीमा उत्तरी अरब सागर से गुजरात के नौसारी, महाराष्ट्र के अमरावती, विदर्भ के गोंडिआ, छत्तीसगढ़ के दुर्ग, उड़ीसा के रामपुर (कालाहांडी) से उत्तर पश्चिमी बंगाल की खाड़ी होते हुये पश्चिम बंगाल के मालदा तथा बिहार के भागलपुर से होकर रक्सौल तक आ रही है।
- आगामी 3–4 दिनों के दौरान उत्तरी अरब सागर, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, उत्तरी पश्चिमी बंगाल की खाड़ी, पश्चिम बंगाल एवं बिहार के कुछ और हिस्सों तथा झारखंड एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में मानसून की प्रगति के लिये परिस्थितियां अनुकूल हैं।

मौसम पूर्वानुमान (20 से 27 जून, 2024)

- भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार सप्ताह के आरंभिक चरण 20 से 23 जून, 2024 के दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में कुछ स्थानों पर गरज चमक के साथ हल्की वर्षा जबकि 24 से 27 जून, 2024 के दौरान ज्यादातर स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा के साथ उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र, पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं विंध्य क्षेत्र में कहीं कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। वहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 24 जून, 2024 तक कहीं कहीं गरज चमक के साथ छिटपुट वर्षा होने जबकि 25 से 27 जून, 2024 के दौरान कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र, पूर्वी मैदानी क्षेत्र, विंध्य क्षेत्र एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत अधिकतम तापमान सामान्य अथवा सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से 2 से 4 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने के कारण इन क्षेत्रों में 20 से 23 जून, 2024 के दौरान कहीं कहीं लू चलने की संभावना है।
- प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र, पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य मैदानी क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग में यह 40 से 42 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 42–44

डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। यद्यपि सप्ताह के आरंभिक चरण (21 से 23 जून, 2024) के दौरान कुछ स्थानों पर यह उक्त सीमा से अधिक हो सकता है।

मानसून ऋतु (01 से 20 जून, 2024) के दौरान उत्तर प्रदेश में 42.3 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष कुल 9.3 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है जो सामान्य से 78 प्रतिशत कम है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 46.7 मिमी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 76 प्रतिशत कम कुल 11.4 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 36.1 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 83 प्रतिशत कम कुल 6.3 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई। मानसून ऋतु के दौरान अभी तक प्रदेश के सिद्धार्थनगर जनपद में सर्वाधिक 61.4 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है।

कृषि विभाग से दिनांक 14 जून, 2017 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 102.05 लाख हे. के सापेक्ष 0.70 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 0.60 प्रतिशत है। अब तक धान की नर्सरी लक्ष्य 4.08 लाख हे. के सापेक्ष 2.5 लाख हे. में डाली जा चुकी है जो लक्ष्य का 52.76 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 61.24 लाख हे. के सापेक्ष 0.06 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 0.09 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.81 लाख हे. के सापेक्ष 0.47 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 2.99 लाख हे. के सापेक्ष 0.0029 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 10.61 लाख हे. के सापेक्ष 0.016 लाख हे. की बुवाई एवं अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 0.13 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र तथा आस-पास के क्षेत्रों में अभी भी तापमान सामान्य से अधिक रहेगा तथा वर्षा की भी कम संभावना है अतः कृषक खरीफ फसलों की बुवाई तथा धान की रोपाई उचित नमी/वर्षा प्रारंभ होने पर करें।
- जो किसान भाई अभी तक धान की नर्सरी नहीं डाल पाये है वो मध्यम अवधि (120 से 130 दिन) व कम अवधि (105 से 120 दिन) की किस्मों की नर्सरी डालें।
- जिन कृषकों ने धान की अधिक अवधि की किस्मों की नर्सरी अभी तक नहीं डाली है वो पूर्वी उत्तर प्रदेश में सण्डा विधि (डबल रोपाई) से रोपाई करने हेतु अभी भी नर्सरी डाल सकते हैं।
- खरीफ फसलों की बुवाई हेतु शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज शोधित नहीं है तो उसे शोधित करके ही बुवाई करें।
- किसान भाई धान की कम अवधि की प्रजातियों की सीधी बुवाई कर सकते हैं।
- नर्सरी में पानी का तापमान बढ़ने पर क्यारी से दोपहर के पहले पानी निकाल कर सायंकाल पुनः सिंचाई करें।
- अरहर का अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु रिज और मेड़ बनाकर मेड़ों पर बुआई करें।
- गन्ना में चोटी बेधक कीट के प्रकोप की आशंका के दृष्टिगत सुरक्षित उपचार करें।
- सरकार की प्राथमिकताओं के दृष्टिगत मोटा अनाज जैसे मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कोदों आदि की खेती को महत्ता दी जाय। इन फसलों की खेती से मौसम के कुप्रभाव से भी बचाव किया जा सकता है।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.-1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

धान की खेती

- यदि 20-25 दिन की पौध तैयार है तो स्वयं का सिंचाई का साधन होने की दशा में या वर्षा होने पर धान की रोपाई 2-3 पौधा प्रति हिल 3-4 सेमी. की गहराई तक करें।
- धान की कम अवधि की उन्नत किस्मों सी.ओ.-51, नरेन्द्र-80, मनहर, आई.आर.-50, नरेन्द्र-118, नरेन्द्र-97, पन्त धान-12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान-2, मालवीय धान-917, शियाट्स धान-5, शियाट्स धान -60, नरेन्द्र-1, नरेन्द्र-2 तथा मध्यम अवधि की किस्मों नरेन्द्र-359, पंत धान-10, मालवीय धान-1, एन.डी.आर.-9930111, सीता, सरजू-52, पंत धान-4, शियाट्स धान-1, शियाट्स

धान–2, शियाट्स धान–4, आई.आर.–64 सब–1, नरेन्द्र धान–2065, नरेन्द्र धान–3112–1, मालवीय धान–36 की नर्सरी डालें।

- सुगन्धित धान की किस्मों यथा नरेन्द्र लालमती, पूसा–1637, एच.यू.आर.–1309, कस्तूरी, पूसा बासमती–1509 की नर्सरी डालें।
- संकर धान की किस्मों यथा पंत संकर धान–1, नरेन्द्र संकर धान–2, बायर–6201, सवा–127, पी.ए.सी. –835, पी.ए.सी.–837, पूसा आर.एच.–10, गंगा, सहयाद्री–4, डी.आर.आर.एच.–3, यू.एस.–312, आर.एच. –1531, 27 पी 31 तथा इन्द्रम की नर्सरी डालें।
- ऊसर क्षेत्रों हेतु धान की मध्यम अवधि की किस्मों सी.एस.आर.–10, सी.एस.आर.–43, सी.एस.आर.–13, नरेन्द्र ऊसर धान–2009, सी.एस.आर.–60 की नर्सरी डालें।
- नर्सरी में जड़ की सूड़ी व दीमक का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. 2.5 लीटर प्रति हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें। जड़ की सूड़ी के नियंत्रण के लिये फोरेट 10 जी 10 किग्रा. 3.5 से.मी. स्थिर पानी से बुरकाव करें।
- नर्सरी में खैरा रोग के नियन्त्रण हेतु 5 किग्रा. जिंक सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल के साथ अथवा 2. 50 किग्रा. बुझे हुए चूने को प्रति हे. लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- नर्सरी में सफेदा रोग के नियन्त्रण हेतु 5 किग्रा. फेरस सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.50 किग्रा. बुझे हुए चूने को प्रति हे. लगभग 1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- नर्सरी डालने के लिए शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज पूर्व शोधित न हो तो धान की नर्सरी डालने से पूर्व बीज शोधन सुनिश्चित करें। यदि जीवाणु झुलसा या जीवाणुधारी रोग की समस्या हो तो 25 किग्रा0 बीज के लिए स्टेप्टोमाइसीन सल्फेट 90 प्रतिशत एवं टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत की 4 ग्राम मात्रा को 100 ली. पानी में मिलाकर रात भर भिगो दें। दूसरे दिन छाया में सुखाकर नर्सरी डालें।
- बीज गलन, झोंका, शीथ ब्लाइट, भूरा धब्बा तथा मिथ्या कण्डुआ रोग से बचाव हेतु 2.50 ग्रा. थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. अथवा कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2 ग्रा. अथवा थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. + कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 2 ग्रा. अथवा यथा संभव ट्राईकोडर्मा, 4 से 5 ग्रा. प्रति किग्रा. बीज की दर से बीजशोधन करें।

मक्का की खेती

- देर से पकने वाले मक्के की पहली निकाई जमाव के 15 दिन बाद करें।
- मक्का की शीघ्र पकने वाली संकर किस्मों जे.ए.–3459, प्रकाश, पूसा संकर मक्का–5, विवके संकर मक्का–27, एम.एम.एच.–113, एक्स–1123 जी (3342) तथा संकुल किस्मों आजाद उत्तम, प्रगति, गौरव, कंचन, सूर्या तथा शियाट्स मक्का–2 की बुवाई जून के अंत तक समाप्त करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज बोने से पूर्व, पहले 1 किग्रा0 बीज को 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करना चाहिये तथा बाद में बीज को इमिडाक्लोप्रिड 2 ग्रा./किग्रा. से बीज को शोधित करना चाहिए।
- मक्के में फाल आर्मी वर्म का प्रकोप होने पर 10 से 20 प्रतिशत क्षति की अवस्था में प्रभावी नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.4 मिली. प्रति लीटर पानी अथवा स्पाइनोसैड 0.3 मिली. प्रति लीटर पानी अथवा थायामेथाक्सॉम 12.6 प्रतिशत+लैम्ब्डासाइहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

श्री अन्न की खेती

- सावां की संस्तुत प्रजातियों यथा आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, आई.पी. एम.–148 व आई.पी.एम.–151 की बुआई उचित नमी की दशा में करें।
- कोदों की संस्तुत प्रजातियों जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जी.पी.वी.के.–3 की बुआई उचित नमी की दशा में करें।
- ज्वार की संस्तुत संकुल प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.–13, सी.एस.वी.–15, एस.पी.बी.–1388 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.–16, सी.एस.एच.–9, सी.एस.एच.–14, सी.एस.एच.–18, सी.एस. एच.–13 व सी.एस.एच.–23 के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के अंतिम सप्ताह में बुवाई की जा सकें।

अरहर की खेती

- सिंचित क्षेत्रों में पश्चिमी उ.प्र. हेतु अरहर की अगेती संस्तुत किस्म पारस (पी.ए.–291), मध्य उत्तर प्रदेश हेतु पूसा अरहर–16, सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत किस्मों यू.पी.ए.एस.–120, टा–21 तथा पूसा–992, पी.ए.–6 की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें। अधिक उत्पादन हेतु मेड़ों पर ही बुवाई करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

तिल की खेती

- तिल की उन्नत किस्मों यथा गुजरात तिल–6, आर.टी.–346, आर.टी.–351, तरूण, प्रगति, शेखर, टा–78, टा–13, टा–12 तथा टा–4 के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के अंतिम सप्ताह में इसकी बुवाई की जा सकें।

सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत उन्नत किस्मों यथा पी.के. 472, पी.एस. 564, पी.के. 416, पी. एस. 1024, पूसा–16, पी.एस.1042, जे.एस. 20–34, जे. एस. 20–98, पंत सोयाबीन–26, जवाहर सोयाबीन 20–116, बुंदेलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एस.–2, जे.एस.–93–5, जे.एस.–72–44, जे.एस.–75–46, पूसा–20, जे.एस.–335, एम.ए.यू.एस.–47, एन.आर.सी.–37 तथा तराई क्षेत्र तथा भांभर क्षेत्र हेतु संस्तुत पी.के.–262 की बुवाई उचित नमी तथा उचित तापमान पर करें।

गन्ना की खेती

- गन्ना में यूरिया की अंतिम टापड्रेसिंग उचित नमी की दशा में करें।
- पोक्का बोइंग रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 0.2 प्रतिशत अथवा कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर पत्तियों पर छिड़काव करें।
- गन्ना फसल हेतु अधिक हानिकारक चोटीबेधक कीट की तृतीय पीढ़ी से बचाव हेतु क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.7 एस.सी. की 375 मि.ली. मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से गन्ने की लाईनों के पास डेचिंग करें।
- शरदकालीन बावग गन्ने में व्यांत की अवस्था पूर्ण हो चुकी है, अतः गन्ने को गिरने से बचाने एवं अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने हेतु गन्ने की जड़ों पर मिट्टी अवश्य चढ़ा दें।
- किसान भाई गन्ने में नमी की कमी होने की दशा में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।

सब्जियों की खेती

- खरीफ की सब्जियों की बुवाई प्रारंभ करें।
- अदरक, हल्दी में नमी बनाये रखें।
- सब्जियों में कीटनाशक का प्रयोग करने के बाद एक सप्ताह के बाद ही सब्जियां बाजार में भेजें।
- मिर्च में पर्णकुंचन एवं मोजैक विषाणु रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग का प्रसार वाहक कीट सफेद मक्खी या हॉपर कीट के द्वारा होता है। इसके प्रसार की रोकथाम हेतु आवश्यकतानुसार इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10 से 12 दिनों के अंतरातल पर छिड़काव करें तथा रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिये क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- भिण्डी की फसल में सफेद मक्खी के रोकथाम के लिये ग्रसित पौधें को उखाड़कर जला दे या मिट्टी में दबा दें तथा रोग वाहक कीट को नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. लगायें। इसके रासायनिक उपचार में इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मि.ली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम के बागों में नमी बनाये रखें।
- आम में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे. में 6 से 8 फुट की ऊंचाई पर टहनियों में बांध कर लटकाये तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें तथा 20–25 दिन के अंतराल पर ल्योर को बदलते रहना चाहिये।

- परिपक्वता आने पर प्रातः अथवा सायंकाल फलों की 8–10 मि.मी. डंठल सहित तुड़ाई की जानी चाहिये।
- केले के नवीन बाग लगाने हेतु उतक संवर्धित रोगरोधी जी–9 प्रजाति लगायें।

पशुपालन

- वर्तमान में ब्रुसेला बीमारी का 30 जून तक एवं गलाघोंटू बीमारी का 15 जुलाई तक निःशुल्क टीकाकरण चल रहा है। यह सुविधा पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- खुरपका एवं मुहपका (एफ.एम.डी.) बीमारी का 15 जुलाई से 30 अगस्त तक 60 जनपदों में तथा लम्पी त्वचा रोग का टीकाकरण 15 सितम्बर से प्रदेश के समस्त जनपदों में निःशुल्क चलाया जायेगा।
- मुर्गियों में उनके बाड़े का तापमान गर्मी में 18.26 डिग्री सेल्सियस होना चाहिये, जिसको घटाने के लिये उनके शेड की छत पर बोरा डालकर स्प्रिंकलर से आधे से एक घंटे में तराई करते रहना चाहिये।
- पशुओं को धूप से बचने के लिये दोपहर में छायादार स्थान पर बांधे तथा सुबह एवं सायंकाल में ही चराई करायें।
- पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें। दुहान से पहले पशुओं को सुबह शाम नहलायें और खरहरा करें, जिससे पशुओं में दूध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़ें।
- दोपहर के समय पशुओं को नहलाने एवं चराई से बचायें।
- पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलायें, पशुओ को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) न खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीली तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- ज्वार फसल की प्रथम कटाई 40 से 50 दिन बाद ही करें, जिससे ज्वार में पाये जाने वाले एच.सी.एन. तत्व से पशुओं में होने वाली बीमारी से बचा जा सकता है।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।
- पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सा की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- खरीफ चारा फसलों की बुवाई का समय प्रारंभ है। सभी पशुपालक/कृषक खेत की अच्छी तैयारी कर उन्नतशील किस्म के चारा बीज की समय से बुवाई करायें। बीज पशुपालन विभाग के प्रक्षेत्रों से प्राप्त किया जा सकता है।

मत्स्य पालन

- कतला, रोहू, नैन प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का समय आ गया है। कतला, रोहू, नैन मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन करायें। सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का मत्स्य बीज वर्तमान में उ.प्र. मत्स्य विकास निगम व निजी क्षेत्र में उपलब्ध है अतःमत्स्य पालक जनपदीय कार्यालय से सम्पर्क कर मत्स्य बीज संचय करायें।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।
- तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें।
- मछलियों में वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 से 2 प्रतिशत तक किया जाय। मछलियों को निश्चित समय पर भोजन दिया जाय।
- 01 जून से 31 अगस्त तक बड़ी मछलियों को पकड़ना प्रतिबंधित है।

रेशम

- टसर बीजागारों में संरक्षित कोयों में प्यूपा को जीवित रखने के लिए ठण्ड बनाये रखें।
- सिंचित क्षेत्र में शहतूत पौधों की तथा शहतूत/अर्जुन की नर्सरी की आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- रेशम फार्मों की सुरक्षा हेतु बबूल की हेज तैयार करने हेतु फार्मों के चारों तरफ खाई में बबूल बीज की बुवाई करें।

- नये क्षेत्र में वृक्षारोपण कराने हेतु मृदा कार्य पूर्ण कराया जाय।

वानिकी

- बंसुरी विधि द्वारा बांस के रोपण का कार्य करें।
- वृक्षारोपण से पहले पौधों को नर्सरी से निकालकर 10 से 20 दिनों के लिये विश्राम अवधि में रखें।
- पौधों को छाया स्थान पर रखें तथा फुआरे विधि द्वारा हल्की सिंचाई करते रहे।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 27 जून, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध है। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।

20/06/24

(पीयूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।

29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
47. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
48. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

20-6-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की सातवीं बैठक दिनांक 20 जून, 2024 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
3. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ।
4. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ
5. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।
6. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
7. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
8. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
9. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
10. श्री सत्येन्द्र यादव, वरिष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
11. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
12. श्री सचिन आर्या, कीट विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
13. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
14. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (ऑनलाइन)।
15. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
16. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)।
17. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।